सिरमौर जनपद के विभिन्न संस्कार गीतों का सांगीतिक अध्ययन

SYNOPSIS

SUBMITTED TO THE ETERNAL UNIVERSITY, BARU SAHIB

IN PARTIAL FULFILMENT OF THE REQUIRMENTS

FOR THE DEGREE OF

Ph.D

IN MUSIC

BY

VARSHA DEVI

[BS19PAMU002]

AKAL COLLEGE OF ARTS AND SOCIAL SCIENCES

ETERNAL UNIVERSITY

BARU SAHIB, HIMACHAL PRADESH-173101 (INDIA)

NAME OF THE STUDENT	:	VARSHA DEVI
REGISTRATION NUMBER	:	BS19PAMU002
MAJOR SUBJECT	:	MUSIC
NAME OF ADVISOR	:	DR. PURVI LUNIYAL
NAME OF THE DEPARTMENT	:	DEPARTMENT OF MUSIC
NAME OF COLLEGE	:	AKAL COLLEGE OF ARTS AND SOCIAL SCIENCES

1. **शीर्षक : (TITLE) सिरमौर जनपद के विभिन्न संस्कार गीतों का सांगीति की अध्ययन**

2. **भूमिका (Introduction) :** सिरमौर जिले की लोक संस्कृति बहुत ही धनी है। इस संस्कृति को सांगीतिकी के साथ पीढ़ी दर पीढ़ी यहाँ के बसने वालों ने संवारा, सजाया और यथावत संभाला भी है ।

यहाँ हर अवसर उत्सव की तरह मनाया जाता है सिरमौरी लोक संस्कृति में जहाँ लोक ताल, लोक गीत, लोक नृत्य, लोक नाट्य श्रुति और स्मृति के साथ पुराने समय से चले आ रहे हैं, वहीँ हमारे विभिन्न संस्कारों को भी सांगितिकी के साथ पूर्ण आस्था से जोड़ने की परम्परा रही है । सिरमौर में लोक गीतों का भी महत्वपूर्ण स्थान है, इसका मुख्य कारण यही है कि सिरमौरी लोक संस्कृति में जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेकों छोटे छोटे संस्कार होते हैं। जिन्हें बहुत ही उत्साह के साथ मनाये जाने की परम्परा रही है । संस्कार गीत, लोकगीतों का अभिन्न अंग है । संस्कारों के अवसर पर समयनुसार जो गीत गाये जाते हैं उन्हें संस्कार गीत कहा जाता है ।

हमारे शिष्ट साहित्य में 16 प्रकार के संस्कार गीतों का वर्णन किया गया है,

जो इस प्रकार है : –

- गर्भ धारण
- पुंसवन

- सीमन्तोनयन
- जातकरण
- निष्क्रमण
- अन्नप्राशन
- चूड़ाकर्म
- विधारंभ
- कर्णभेद
- यज्ञोपवीत
- वेदारम्भ
- केशान्त
- समावर्तन
- विवाह
- अंत्येष्टि

परन्तु आजकल हमारी लोक संस्कृति में कुछ ही प्रमुख संस्कार प्रचार में हैं, जो कि इस प्रकार हैं–

- जन्म संस्कार
- नामकरण संस्कार
- अन्नप्राशन संस्कार
- मुंडन संस्कार
- यज्ञोपवीत संस्कार
- कर्णभेद संस्कार
- मृत्यु सरकार

बच्चे के जन्म पर नगाड़े पर बेउल बजते ही कलाकारों ने भरमाऊं लोक संस्कार का पहला गीत प्रस्तुत किया, यह संस्कार गीत का प्रथम चरण है । शिशु के जन्म पर असंख्य गीत गाये जाते है जो कि बच्चे के जन्म के समय के गीत हैं, बच्चे के जन्म के बधाई के गीत हैं, मुंडन के गीत हैं, मंगल गान गीत, यज्ञोपवीत, जनेऊ के गीत आदि।

शादी ब्याह में तो असंख्य संस्कार गीत लोक आकर्षण व उस समय की शान है । यह गीत विवाह की विभिन्न रस्मों के अनुसार गाये जाते हैं।

बटने उबटन के गीत हैं, हवन के समय की तेल डालने के समय के गीत, घोड़ी, वर यात्रा के गीत, सेहरा गीत, सुहाग गीत, लगन वेदी के समय गाये जाने वाले गीत, लड़की की विदाई के गीत और बधु प्रवेश के समय के गीत। इसी प्रकार बारातियो को खाने के वक्त हलकी छेड़छाड़ भरे गीत भी सुनने को मिलते है,जिन्हे सिठनियाँ कहा जाता है, इसी प्रकार पडुवा गीत भी जन्म व शादी व खुशी के पर्व के समय में एक श्रृंगार है। मृत्यु संस्कार के समय ताल वादकों द्वारा बखान भी लयात्मक लोक संस्कार की व्याख्या है, मृत्यु पर भी लोक गायक शोक गीत गाता है।

इन वर्णित संस्कारो में से भी आजकल मुख्यतः जन्म, विवाह तथा मृत्यु संस्कार ही रह गए हैं, जो कि बुजुर्ग पीढ़ी के पास ही सुनने को मिलते हैं। मूल रूप से आजकल संस्कार गीतों को गाने वाले बहुत कम रह गए हैं, एवं इन गीतों की कोई (Recording) रिकॉर्डिंग भी उपलब्ध नहीं होती हैइसलिए ये कला/संस्कार गीत विलुप्त होते जा रहे हैं, इसके अलावा आज के परिवेश में फिल्मों रूपहलों पर्दों की लय व झूठे आकर्षण व शहरीकरण तथा पाश्चात्य संस्कृति के दिनों दिन बढ़ते प्रभाव के कारण हमारी मूल संस्कृति का विनाश हो रहा हैं तथा हमारी भावी पीढ़ी अपनी लोक कलाओं व लोक संस्कृति से विमुख होती जा रही है इसलिए इन संस्कार गीतों का संरक्षण करना अति आवश्यक हो जाता है । हिमाचल प्रदेश में आज भी देव परम्परा का बहुमूल्य स्थान है और यह संस्कार गीत देव परंपरा से सम्बंधित ही पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे हैं।

2.1 गुंजाइश : (Scope) : –हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत पर कुछ शोध प्रबंध अवश्य मिलते हैं परन्तु हिमाचल प्रदेश एक बड़ा क्षेत्र है, जिसमे लगभग 12 जिले शामिल हैं और हर जिला अपनी एक विशिष्ट लोक संस्कृति रखता है, यही नहीं जिले के अंतर्गत भी गिरी आर व गिरी पार के क्षेत्रों की लोक संस्कृति भिन्न हो जाती है । सिरमौर जिले में ही लगभग 976 गावं हैं और तहसीलों की संख्या 7 है तथापि हर क्षेत्र की परम्पराओं, रीति – रिवाज, गीत – संगीत में भिन्नता पाई जाती है इसलिए प्रत्येक जिले के

संस्कार गीतों पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। इससे सम्बंधित जो लोक संगीत पर जो शोध –प्रबंध मिलते हैं, उनमे संस्कार गीतों की एक सीमित मात्रा ही शामिल है ।

उदाहरण के लिए :–विवाह से सम्बंधित गीत, दूल्हा दुल्हन के स्नान गीत, सेहराबंदी के गीत, घोड़ी के गीतों के वर्णन आदि मिलता है परन्तु जन्म, मृत्यु, यज्ञोपवीत, मुंडन, अन्नप्राशन, नामकरण आदि से सम्बंधित कोई कार्य नहीं मिलता है ।

2.2 शोध कार्य का महत्व (Importance)आज के समय में संस्कार गीतों का संरक्षण अति आवश्यक हो गया है। इस विलुप्त होती कला को अपनी भावी पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए इस विषय पर शोध कर इन गीतों को संगृहीत कर इनका सांगीतिक अध्ययन महत्वपूर्ण हो गया है। सिरमौर जिले के संस्कार गीतों में प्रयुक्त होने वाली ताल अपना एक विशिष्ट स्वरुप रखती है, जिसका अध्ययन अन्य संगीत शैलियों की तालों से बहुत भिन्न है। इसलिए भी यह विषय अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है ताकि यहाँ की लोक सांगीतिक गायन वादन शैली का प्रचार प्रसार हो सके।

किसी भी राष्ट्र के लिए उसकी संस्कृति एक अमूल्य निधि होती है और हम यह भी जानते हैं कि वैश्वीकरण के कारण संस्कृति को बहुत आघात पहुंचा है। अपनी पुरानी परम्पराओं का संरक्षण राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर को सँभालने के लिए जरूरी हो जाता है, इसी दिशा में सिरमौर जिले के संस्कार गीतों का सांगीतिक अध्ययन एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य बन जाता है ।

2.3 शोध कार्य का उद्देशय (Objectives): –पहले विभिन्न वादियों में जाकर मौलिक पारम्परिक संस्कार गीतों को खोजने का प्रयास कर एवं उसे शोध में संकलित कर उनका सांगीतिक अध्ययन करना है तथा इस विलुप्त हो रही अमूल्य सम्पदा का संरक्षण करना है ।

संस्कार गीतों का संकलन : –

- पारम्परिक रूप में गाये – बजाए जाने वाले संस्कार गीतों का मौलिक रूप में संकलन करना ।
- संग्रहित संस्कार गीतों को स्वरबद्ध कर उनको शास्त्रबद्ध रूप प्रदान करना ।
- संस्कार गीतों का सांगीतिक एवं साहित्यक अध्ययन कर उसमे प्रयोग होने वाले रागो एवं तालों का निरीक्षण करना ।

3. आपेक्षित नव ज्ञान (Expected New Knowledge) : –

- सिरमौर जिले के भिन्न भिन्न इलाकों की संस्कृतियों से जुड़े गीतों एवं रीति –रिवाजों का उजागर होना ।
- संस्कार गीतों का संग्रहण
- संग्रहित संस्कार गीतों की विशुद्ध (रिकॉर्डिंग बुजुर्गों से प्राप्त होने की सम्भावना है)
- संस्कार गीतों का सांगीतिक अध्ययन अर्थात उनमे प्रयोग होने वाले राग एवं तालों का निरीक्षण ।
- संस्कार गीतों का शास्त्रबद्ध रूप अर्थात उनकी स्वर लिपियों का प्रतिपादन।

4. संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन (Review of Literature)

- सबसे प्रथम शोध प्रबंध जिला सिरमौर के लोकगीतों का जो प्राप्य है वह डॉक्टर कृष्ण लाल सहगल जी (1985) द्वारा प्रतिपादित है, इससे पहले सिरमौर लोकगीतों पर कोई शोध कार्य नहीं किया गया है इसमें लेखक ने लोक गीतों में प्रयुक्त होने वाले रागों की छाया पर कार्य किया है । लोकगीतों के अंतर्गत इन्होने अधिकतर कार्य नाटियों पर किया है। आगे चलकर डॉक्टर कृष्ण लाल सहगल (1992) ने सिरमौरी लोक गीतों का सांगीतिक विश्लेषण भी प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने अपने पुराने कार्य को ही अर्थात लोक गीतों में रागों एवं तालों का ही विस्तृत विश्लेषण किया ।
- जयराम शर्मा (1993) ने अपने शोध प्रबन्ध में हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जनपद के लोक संगीत का अध्ययन, में पारम्परिक सामूहिक लोक नृत्य, माला नृत्य, गायन पक्ष के गीत लोक वाद्यों का प्रयोग, संस्कार गीत, पर्व त्यौहार, गीत धार्मिक अथवा भक्ति गीत भाषा संस्कृति, वेशभूषा, मेले लोक कथाएं एवं लोक गाथाओं का प्रतिपादन किया है।
- कांगड़ा के लोक गीतों में लेखक सतीश कुमार (1995) ने अपने शोध प्रबन्ध में लोक साहित्य, लोक कथा, लोक गाथाएं तथा कांगड़ा के लोक गीतों की विविध शैलियों का विश्लेषण किया है।

इसके अतिरिक्त कांगड़ा के लोक गीतों का वर्गीकरण एवं कांगड़ा के संस्कार गीत, मुन्डन गीत, बधाई गीत, यज्ञोपवीत गीत, विवाह गीत, मृत्यु गीतों आदि को प्रतिपादित किया है।

- कुमार कमलेश (1997) ने अपने शोध कार्य में शिमला जनपद के धार्मिक और सांस्कृतिक गीतों का शास्त्रीय संगीत के साथ विशेष सम्बन्ध व लोक संगीत तथा शास्त्रीय संगीत में अन्तर बताया है। इसमें लेखक ने राग छाया,

- लोकगीत एवं वाद्यों का सह सम्बन्ध, सांस्कृतिक परम्पराएं, मेले एवं त्यौहारों तथा पारम्परिक लोक गीत, लोक नृत्य का प्रतिपादन किया है।

- डॉक्टर नीरजा सहगल (2001) द्वारा प्रतिपादित शोध प्रबंध में सिरमौर जिले में प्रचलित अनिबद्ध शैली के गीतों का अध्ययन मिलता है ।

- ओम प्रकाश (2011) द्वारा सोलन जनपद के संस्कार गीतों का अध्ययन किया गया है। इस शोध प्रबन्ध में लेखक ने लोक संस्कृति का संस्कार गीतों के साथ सम्बन्ध, लोक संगीत व शास्त्रीय संगीत का पारम्परिक सम्बन्ध प्रतिपादित किया है।

इसके अतिरिक्त करियाला नाट्य का उद्गम विकास तथा संस्कार गीतों के साथ सम्बन्ध तथा संस्कार गीतों का विश्लेषण भी प्राप्त होता है। जैसेः– सेहराबन्दी, नधार गीत, वेदी गीत, स्वागत बारात एवं संस्कार गीतों की स्वर लिपि आदि।

- अशोक कुमार यमन (2015) ने हिमाचल प्रदेश के लोकगीतों को उद्देश्यानुसार चार भागों में विभाजित किया। जिनमे प्रेम गीत, वीरत्व गीत, भक्ति गीत तथा संस्कार गीत में चार भाग मिलते हैं।

- देवराज (2016) ने सिरमौर जिले के संस्कार गीतों का विपुल वर्णन किया है, पर इसके अंतर्गत भी उन्होंने विवाह से संबधित संस्कार गीतों का ही उल्लेख किया है ।

जैसे :–

सेहरा गीत

स्नान गीत

बटणा मलने के गीत

कार पूजन अथवा ब्याह निर्धारण के गीत

शांत गीत

नधार गीत

धाम के समय अन्य अवसरों पर गाये जाने वाले शीठणे, पड्डुवा गीत,

धाम के समय गाये जाने वाले शीठणे, कन्या की विदाई के गीत।

इनमे से –

तेल डालने का गीत

स्नान गीत

बटणा मलने के गीत आदि

गीतों के बोल एवं स्वरलिपियाँ भी प्रतिपादित की गई हैं ।

दिलवर कुमार (2017) के अनुसार लोकगीतों में संस्कार गीतों का विशेष स्थान होता है। संस्कारों के अंतर्गत इन्होंने नामकरण, कर्णभेद, चूड़ाकर्म, तथा विवाह आदि का उल्लेख मात्र ही किया है तथापि संस्कार गीतों पर अधिक कार्य नहीं मिलता है।

5. तकनीकी कार्यक्रम (Technical Programme) :

शास्त्रों में वर्णित 16 संस्कारों में से मुख्यतः तीन संस्कारों पर शोध कार्य किया जाएगा ।

- जन्म संस्कार
- विवाह संस्कार
- मृत्यु संस्कार

इन संस्कार गीतों का संकलन करने के लिए सिरमौर जिले के उन क्षेत्रों का चयन किया जाएगा जहां की संस्कृति में भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। इसी प्रकार सिरमौर जिले में 7 तहसीलें हैं।

- नाहन
- पांवटा साहिब

- पच्छाद
- संगड़ाह
- ददाहु
- राजगढ़
- शिलाई

प्रत्येक तहसीलों से कुछ मुख्य गांव का चयन कर अधिकाधिक बुजुर्गों एवं कलाकारों को पंचायत के माध्यम से मुख्य गांव में एकत्रित कर विस्तृत साक्षात्कार (वार्तालाप) किया जाएगा । इसके अतिरिक्त विवाह सम्बन्धित विशिष्ट महीनों में विवाह आदि समारोहों में, अवलोकन प्रविधि के माध्यम से अधिकाधिक गीत संकलित करना आपेक्षित है।

शोध क्षेत्र (Location) :

तहसील	गांव
नाहन	चकली, कोला वाला भूढ़, नैहर सवार
पच्छाद	नारग, बाग पशोग, दीद, घलुत, सराहाँ
ददाहु	बेचड़ बाग, रेणुका जी मेला, धाहऊँ
राजगढ़	देवठी, मझगांव, हाब्बन, मानवा
संगड़ाह	भराड़ी, लाना चेता, भाटन भुझोण्ड
शिलाई	रोनहाट, शिलाई
पांवटा साहिब	जमना, भंगानी

शोध प्रविधि (Methodology) :

साक्षात्कार (Interview) :

-
- सिरमौर जिले की संस्कृति का गहन अध्ययन हेतु प्रत्येक संस्कार से सम्बन्धित निभाई जाने वाली लोक परम्पराओं का अवलोकन कर छोटे–छोटे संस्कारों पर गाई जाने वाले गीतों का

संकलन किया जाएगा । इन गीतों का संकलन करने हेतु पुश्तैनी लोक गायिकाओं का भी साक्षात्कार किया जाएगा । ओडियो (**Audio/Videography**) वीडियोग्राफी कर शोध प्रबन्ध में संलग्न किया जाएगा ।

- विवाह समारोह
- रेणुका जी मेला (24 से 30 नवम्बर)

अवलोकन (Observation to be recorded) :

- गीतों की ओडियो **Audio** एवं वीडियो **Video** रिकॉर्डिंग **Recording**
- संस्कारों के अवसर पर गाई जाने वाली लोक गायन शैली एवं उसमें प्रयुक्त होने वाली तालों का निरीक्षण किया जाएगा, जैसे :– बड़हंस ताल एवं अन्तरेड़ा ताल आदि।
- लोक गायन शैली में प्रयुक्त धुन एवं राग छाया ।
- धुन एवं राग छाया

6 सहयोगी संस्थान (Collaboration)–NIL

7. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (Reference)

- कुमार, दिलबर (2017): हिमाचल प्रदेश के लोकगीतों का सांगीतिक योगदान,शिमला : हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी
- देवराज, (2016): सिरमौरी लोक संगीत पर सीमावर्ती क्षेत्रों का प्रभावशिमलाः हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी
- यमन, अशोक कुमार (2015) संगीत रत्नावली, अभिषेक पब्लिकेशन चंडीगढ़
- सहगल, कृष्ण लाल (1985): सिरमौर जनपद के लोकगीतों में राग छायाशिमलाः हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी

- सहगल, कृष्ण लाल (1992): सिरमौर की लोक संस्कृति में लोक संगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन, शिमलाः हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी
- सहगल, नीरजा (2001) : सिरमौरी जनपद के लोकगीतों में अनिबद्ध शैली के गीतों का अध्ययन, शिमलाः हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी।
- शर्मा, जयराम (1993) : हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जनपद के लोक संगीत का अध्ययन, शिमला : हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी।
- प्रकाश, ओम (2011) सोलन जनपद के संस्कार गीतों का सांगीतिक अध्ययन, शिमला : हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी।
- कुमार, कमलेश (1997) : शिमला जनपद की धार्मिक और सांस्कृतिक लोक गीतों का सांगीतिक अध्ययन, शिमला : हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी।
- कुमार, सतीश (1995) : कांगड़ा के लोक गीतों में विकसित रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

पत्रिकाएँ :

सोमसी	–	डॉ0 बंशीराम – भाषा कला, संस्कृति विभाग शिमला ।
हिम भारती	–	डॉ0 बंशीराम – भाषा कला, संस्कृति विभाग शिमला ।
हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति और साहित्य	–	व्यथित डॉ0 गौतम शर्मा – नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया नई दिल्ली